

सवैये

1

मानुष हौं तो वही रसखानि बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।
जौ पसु हौं तो कहा बस मेरो चरौं नित नंद की धेनु मझारन।
पाहन हौं तो वही गिरि को जो कियो हरिछत्र पुरंदर धारन।
जौ खग हौं तो बसेरो करौं मिलि कालिंदी कूल कदंब की डारन।

2

या लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहूँ पुर को तजि डारौं।
आठहूँ सिद्धि नवौं निधि के सुख नंद की गाइ चराइ बिसारौं।
रसखान कबौं इन आँखिन सौं, ब्रज के बन बाग तड़ाग निहारौं।
कोटिक ए कलधौत के धाम करील के कुंजन ऊपर वारौं।

3

मोरपखा सिर ऊपर राखिहौं, गुंज की माल गरें पहिरौंगी।
ओढ़ि पितंबर लै लकुटी बन गोधन ग्वारनि संग फिरौंगी।
भावतो वोहि मेरो रसखानि सौं तेरे कहे सब स्वाँग करौंगी।
कल्पित धन कैया मुरली मुरलीधर की अधरान धरी अधरा न धरौंगी।

तप और साधना से प्राप्त होती है। (शक्ति प्राप्त)

एक बेल होती है जिसमे लाल, काले, सफेद होती जैसे बेल निकलते हैं

पुराणों में कल्पित धन कैया मुरली मुरलीधर की अधरान धरी अधरा न धरौंगी।
देवता कुबेर की निधियों के नौ भिन्न-भिन्न रूप